

खूँटी ईख प्रबंधन की अनुषंसित तकनीक

अभीक पात्र ¹, आर.पी. सिंह ², रातुल मोनी राम ², हिमांशु सिंह ², बी.के. सिंह ² एवं
आशुतोष कुमार ²

¹ कृषि विज्ञान केंद्र, बेगूसराय

² कृषि विज्ञान केंद्र, नरकटियागंज, पश्चिम चम्पारण

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार

बिहार राज्य में खूँटी ईख की खेती बहुत लोकप्रिय है। अगर हम किसानों तक ईख उत्पादन क उन्नत तकनीक पहुँचाने में असमर्थ हो गए तो किसान अवष्य ही ईख से अन्य फसलों की अपेक्षा अधिक आय प्राप्त कर सकते हैं। मुरहन फसल की तुलना में खूँटी फसल की खेती आसान होती है। ईख के कुल क्षेत्रफल का करीब 40 प्रतिषत क्षेत्र में खूँटी ईख की खेती की जाती है। इस फसल की उपज काफी कम है, जिसका मुख्य कारण उपर्युक्त व्यवस्था को नहीं अपनाना है।

खूँटी से लाभ :

- खेत को प्रारंभिक क्रिया नहीं करनी पड़ती है, जिसके कारण 25–38 प्रतिषत उत्पादन खर्च बच जाता है।
- बीज तथा रोपाई के खर्च में बचत होती है।
- फसल जल्दी पक कर तैयार हो जाती है।
- रोपनी हेतु सिराउर (नालियां) नहीं बनाना पड़ता है।
- रोप हेतु टुकड़े नहीं करने पड़ते हैं।

खूँटी से अधिक उपज लेने के उपाय फसल एवं प्रभेद का चुनाव :

स्वस्थ मुरहन फसल जिसमें पौधा की पर्याप्त संख्या हो, खूँटी फसल के लिए उपयुक्त है। जिसमें अंकुरण करने एवं कल्ले फूटने को अधिक क्षमता हो।

सही समय पर मुरहन की कटाई :

आमतौर पर ईख की कटाई अक्टूबर से अप्रैल तक चलता है। परन्तु अन्तिम जनवरी से 15 मार्च तक काटी गई मुरहन फसल से खूँटी फसल प्राप्त होती है।

खेत का चुनाव :

ऊँची समतल दोमट मिट्टी जिसमें मुरहन अच्छी हो, खूँटी ईख के लिए उपर्युक्त है। जल जमाव, कीट-व्याधिग्रस्त वाले खेत में खूँटी कदापि नहीं रखना चाहिए।

खूँटी ईख की छटाई एवं मेड़ तोड़ना :

यथा समय मुरहन फसल की कटाई सावधानीपूर्वक करना चाहिए। कटनी तेजधार वाले औजार से जमीन के सतह से लगभग 5—7 से.मी. नीचे से करना चाहिए। इस प्रक्रिया से खूँटी में कल्ले स्वस्थ तथा समान रूप से निकलते हैं। मेड़ को तोड़कर खूँटी को बचाते हुए अच्छी जुताई करें, जिससे पुरानी जड़ें कट जाए तथा नई जड़ों का विकास हो।

मिट्टी एवं खूँटी उपचार :

खूँटी तोड़ने के बाद 20 टन कम्पोस्ट या गंधकीय प्रेसमड समान रूप से छींट कर देशी हल से जोतकर मिला दें। खूँटी के कटे हुए भाग पर झरने या स्प्रेयर द्वारा ज्वेस्टिंग का 0.1 प्रतिषत 01ग्राम के घोल में प्रति लीटर पानी के साथ छिड़काव करें। खूँटी सफाई के तीन सप्ताह बाद रसाईनिक उर्वरक के व्यवहार के बाद 15 कि०ग्रा० फोरेट प्रति हेक्टर के दर कीटों से सुरक्षा के व्यवहार करें।

खाली जगहों को भरना :

खूँटी में लगभग 38240 झुण्ड प्रति हेक्टेयर होना चाहिए। प्रति मीटर की दूरी में तीन झुण्ड तथा झुण्डों की संख्या 27000—33000 प्रति हेक्टर हो तो फसल की उपज पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यदि झुण्डों की संख्या इससे कम हो तो उपज पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। खाली स्थानों में अंकुरित आँखों वाले टुकड़ों को रोपाई कर दें यह कार्य पहली सिंचाई के समय करना लाभकारी है। खाली स्थानों में अंकुरित झुण्ड पॉली बैग द्वारा विकसित पौधों द्वारा भर दें। जबतक अंकुरित पौधा ना लग जाय खेत में नमी बनाये रखना चाहिए।

उर्वरक की मात्रा :

खूँटी खेत के लिए मुरहन की अपेक्षा अधिक नेत्रजन की आवश्यकता होती है क्योंकि खूँटी फसल में जीवाणु की सक्रियता जड़ों को सड़ाने में अधिक होती है। खूँटी ईख फसल के लिए 170 कि०ग्रा०नेत्रजन, 50 कि०ग्रा० पोटाष प्रत हेक्टेयर की दर से अनुषंसित है।

क्र०सं०	समय	नेत्रजन	स्फूर	पोटाष
1.	खूँटी की सफाई के 3 सप्ताह बाद	80	50	60
2.	खूँटी की सफाई के 7-8 सप्ताह बाद	45	-	60
3.	मिट्टी चढ़ाते समय	45	-	60
	कुल मात्रा (तत्व)	170	50	60

अनुशंसित मात्रा का आधा नेत्रजन, पूरा स्फूर एवं पोटाष खूँटी की सफाई के तीन सप्ताह बाद दें। बांकी बचे नेत्रजन की आधी मात्रा का आधा खूँटी सफाई के 8 सप्ताह बाद तथा शेष मात्रा मिट्टी चढ़ाते समय जून के अंत या जुलाई के प्रथम सप्ताह में व्यवहार करें।

सिंचाई एवं अन्तरकर्षण :

मुरहन फसल की अपेक्षा खूँटी की जड़े पानी को भूमि की ऊपरी सतह से ही ग्रहण करती है। अतः खूँटी फसल में करीब 3 सप्ताह के अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिए। इस प्रकार कुल-4-5 सिंचाई देना आवश्यक है। प्रत्येक सिंचाई के बाद अन्तरकर्षण करना आवश्यक है। इससे खरपतवार नियंत्रण में भी काफी सहायता मिलती है। खेत में जल जमाव की स्थिति में जल निकास का उचित प्रबंध होना चाहिए।

मिट्टी चढ़ाना :

प्रायः किसान भाई मानसून के वर्षा होते ही नेत्रजन की अंतिम मात्रा डाल कर छोड़ देते हैं एवं सीनियर रोजर या कुदाल में मिट्टी नहीं चढ़ाते हैं जो कि उन्हें करना चाहिए। मिट्टी चढ़ाने से ईख गिरने की सम्भावना कम होती है। साथ ही मिट्टी चढ़ाते समय 33 किलोग्राम फ्यूराडान कीटनाषी प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में देना चाहिए।

स्तम्भन :

मुरहन फसल के समान ही अनुषंसित पल्ली विधि द्वारा स्तम्भन करना चाहिए, क्योंकि ईख गिरने से चीनी तथा फसल दाना प्रभावित होती है। इसलिए तेज हवा से बचाने के लिए अगस्त माह से मध्य सितम्बर तक स्तम्भन का काम अवश्य कर देना चाहिए।

पौधा संरक्षण :

पौधा संरक्षण का कार्य आवश्यकतानुसार समय-समय पर अवश्य करना चाहिए। यदि कोई झूंड रोग ग्रस्त दिखे तो उसे सावधानीपूर्वक उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। कीटों से ग्रसित पौधों को जमीन के सतह से 5-7 से.मी. जमीन के नीचे से सटाकर काटकर हटाते रहना चाहिए। इस प्रकार अनुषंसित शस्य क्रियाओं द्वारा मुरहन फसल के समान खूंटी फसल से अच्छी उपज प्राप्त कर सकते हैं।